ISSN 2277-7660

एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष 64 अंक 4 अप्रैल 2013

जाम्भोलाव व लोदीपुर
मेले की हार्दिक
शुभकामनाएं

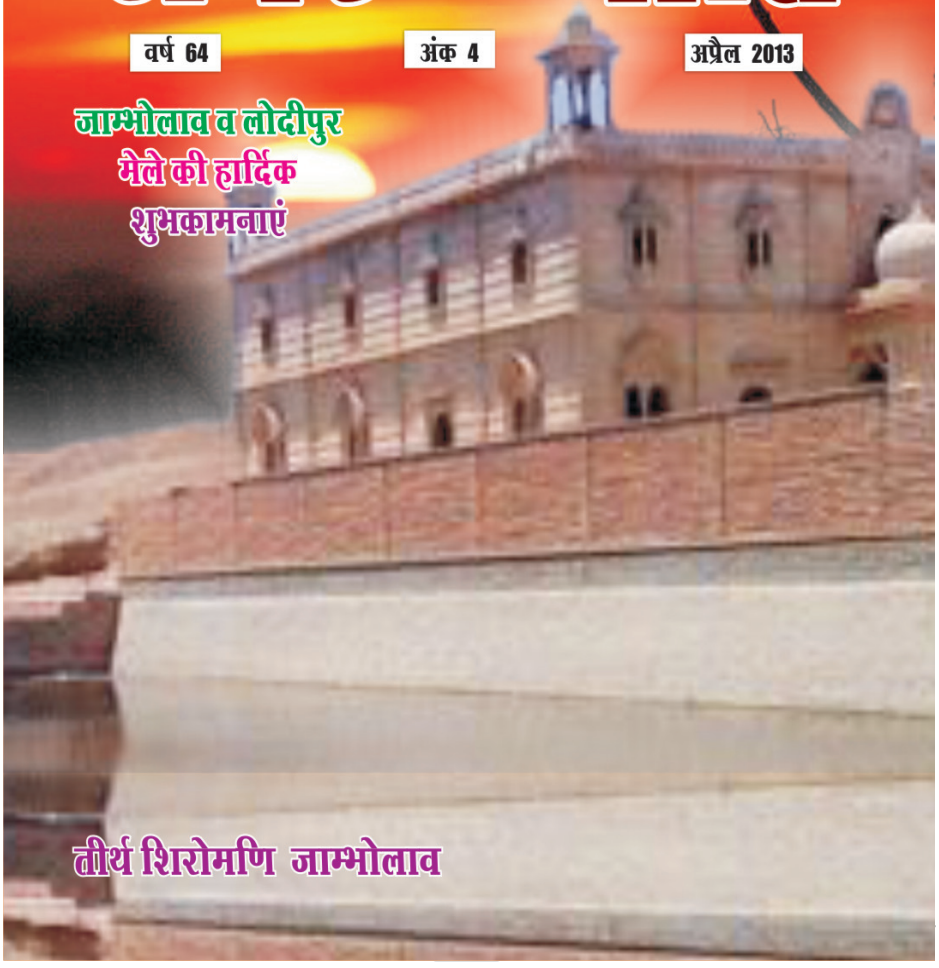

तीर्थ शिरोमणि जाम्भोलाव

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

सन्दीप गोदारा

Mob.: 094663-71529

सभा कार्यालय दूरभाष

Tel.: 01662-225804
E-mail.: editor@amarjyotipatrika.com
info@amarjyotipatrika.com
Website.: www.amarjyotipatrika.com

कार्यालय पताः

'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125001 (हरियाणा)

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 70/-

आजीवन (50 वर्ष के लिए) सदस्यता शुल्क : 700/-

''अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें''

अमर ज्योति
1950
श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद-15	2
3.	गुरु जाम्भोजी का वैश्विक.....	4
4.	अमर-ज्योति	8
5.	जम्भवाणी में लोकमंगल...	9
6.	मुझे आवाज उठाने दो	11
7.	प्राचीन हिन्दू सामाजिक...	12
8.	जड़ता का चैतन्य करो	15
9.	बधाई संदेश	17
10.	पूनमचंद बिश्नोई की स्मृति	18
11.	आज का युवा वर्ग और नशा	19
12.	कलयुग की गैया...	20
13.	ये बिश्नोई की कहानी है	21
14.	मुकाम का महाकुंभ सम्पन्न	22
15.	विष्णुधाम आदर्श सोनड़ी....	24
16.	तृतीय जाम्भाणी राष्ट्रीय संगोष्ठी..	25
17.	सावधान! शिकार.., घायल हिरण..	28
18.	साखी गायन प्रतियोगिता...	29
19.	बिश्नोई सभा सिरसा की...	30
20.	सामाजिक क्षति	31
21.	फार्म-4	32

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

गुरू बिन मुक्त न जाई

भारतीय दर्शन में मुक्ति अर्थात् मोक्ष को मानव जीवन का चरम लक्ष्य घोषित किया गया है। मनुष्य जीवन प्राप्त करने की सार्थकता इसी में है कि हम कुछ ऐसे कार्य करें, जिससे जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाये और आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिल जाए। यदि मनुष्य तन प्राप्त करके हम यह कार्य नहीं करते तो इसका अर्थ है कि हमने विशेष कुछ भी नहीं किया क्योंकि हम जो शेष कार्य करते हैं वे तो अन्य पशु-पक्षी भी करते हैं, फिर मनुष्य जीवन प्राप्त करने का लाभ क्या हुआ? मनुष्य के पास परमात्मा का दिया हुआ 'बुद्धि' रूपी अनूठा उपहार है, जिससे वह करणीय-अकरणीय का विचार कर सकता है तथा करणीय को करते हुए मोक्ष लाभ को प्राप्त कर सकता है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि सभी मनुष्य ऐसा कर क्यों नहीं पाते? इसका कारण यह है कि मनुष्य एक भ्रमित होने वाला जीव है, वह सांसारिक मोह-माया के जाल में उलझकर अपने वास्तविक पथ से भटक जाता है और परिणामस्वरूप उसका अमूल्य जीवन व्यर्थ चला जाता है। अब फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि उसे यह वास्तविक पथ दिखायेगा कौन? इसका उतर है-'गुरु'।

यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। सभी धर्म ग्रंथों, संतों व गुरुओं की वाणी में गुरु महिमा का बखान किया गया है। कई स्थानों पर तो गुरु को भगवान से भी बड़ा बताया गया है। यह सब अकारण ही नहीं कहा गया है। वास्तव में गुरु का मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गुरु ही वह कुशल कारीगर होता है जो शिष्य के जीवन को संवारता है तथा भ्रम की शृंखला को तोड़कर अपने शिष्य को मोक्ष पथ पर आरूढ़ करता है। अज्ञान का पर्दा हटाकर ज्ञान का द्वार खोलने की कुञ्जी केवल गुरु के पास होती है। बिना इस द्वार के खुले मनुष्य पशुसम ही होता है। गुरु ही करणीय-अकरणीय का विवेक जागृत करता है। यही कारण है कि गुरु जम्भेश्वर जी ने भी 'गुरु' की महिमा का बखान अपनी 'सबदवाणी' में अनेक स्थानों पर किया है। उनकी वेदमयी वाणी का प्रारंभ ही 'गुरु' शब्द से होता है-**'गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित'**। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अपनी वाणी में शताधिक बार गुरु की चर्चा की है तथा मनुष्य के जीवन में 'गुरु' के महत्व को रेखांकित किया है।

मानव जीवन में जितना आवश्यक गुरु को धारण करना है उतना ही आवश्यक है गुरु के गुणों को परखना। यदि कोई व्यक्ति गुरु के लक्षणों पर खरा नहीं उतरता और उसे हम गुरु धारण कर लेते हैं तो हमें लाभ के स्थान पर हानि ही प्राप्त होगी। इसलिए गुरु जाम्भो जी ने अपने प्रथम 'सबद' में ही गुरु के लक्षणों की विस्तृत व्याख्या की है तथा पुरोहित के माध्यम से मनुष्य मात्र को सचेत किया है कि पहले गुरु को पहचानो और फिर धारण करो। वर्तमान परिस्थितियों में गुरु महाराज के इन वचनों का महत्व और अधिक बढ़ गया है। इसके साथ-साथ हमें गुरु महाराज के इन वचनों पर भी ध्यान देना चाहिए कि बिना गुरु के मार्गदर्शन के मनुष्य को सद्पथ और मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती-**'गुरु बिन मुक्त न जाई'**।

सबद – 15

प्रसंग –

जाट कहै सुण देवजी, सत्य कहो छौ बात
झूठ कपट की वासना दूर करो निज तात।

दो सबदों को श्रवण करके वह जाट काफी नम्र हुआ और कहने लगा–हे तात ! आपने जो कुछ भी कहा सो तो सत्य है किन्तु मेरे अन्दर अब भी झूठ कपट की वासना विद्यमान है, आप कृपा करके दूर कर दो। गुरु महाराज ने उसकी जिज्ञासा शांत करते हुए निम्नलिखित सबद उच्चरित किया–

ओ३म् सुरमां लेणां झीणा शब्दूं, म्हे भूल न भाख्या थूलूं।

हे जाट ! तूं इन मेरे वचनों को धारण कर जो सुरमें के सामान अति बारिक सूक्ष्म है जैसे सुरमां महीन होता है उसी प्रकार से मेरे शब्द भी अति गहन से गहन विषय को बताने वाले हैं, इसलिये कुशाग्र बुद्धि से ही ग्राह्य है। इन शब्दों को तो शूरवीर पुरूष ही समझ कर इन पर चल सकता है। हमने अपने जीवन में कभी भी स्थूल व्यर्थ की बात नहीं कही। सदा सचेत रह कर आनन्ददायिनी वाणी का ही बखान किया है।

सो पति बिरखा सींच प्राणी, जिहिं का मीठा मूल समूलूं।

हे प्राणी ! तूं उस वृक्षपति को मधुर जल से परिपुष्ट कर जिसका फल–फूल समूल ही मधुर हो।

पाते भूला मूल न खोजो, सींचों कांय कु मूलूं

तुमने वृक्ष के मूल में तो जल डाला नहीं और कभी पतों में कभी डालियों में जल सिंचन करता रहा इससे वह मधुर फलदायी वृक्ष हरा – भरा नहीं होगा और अज्ञानता वश तुमने कुमूल स्वरूप आक धतुरा आदि विष वृक्षों को पानी पिलाता रहा, यह जीवन में तुमने बड़ी भूल की है।

विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै, यह जीवन का मूलूं।

हे प्राणी ! अपने प्राणों के चलते हुऐ श्वासों श्वांस ही विष्णु परमात्मा को सदा ही याद रख, उन्हीं विष्णु का उच्चारण करते हुऐ जप भजन करें और अजर, काम, क्रोध, मोह, मत्स्र्य, ईर्ष्या, राग द्वेष आदि दोषों को निकाल कर शुद्ध पवित्र हो जा। यही जीवन का मूल मन्त्र है। यहां सर्वजन के मूल स्वरूप भगवान विष्णु है तथा डालियां पते रूप छोटे–मोटे देवी देवता है और भूत–प्रेत, जोगिणी, भेरूं आदि कुमूल विष वृक्ष है। विष वृक्ष रूपी भूत–प्रेतों की सेवा सदा ही जीवन को विषैला बना देगी। डाली–पती रूपी देवता से कुछ भी लाभ नहीं, परिश्रम व्यर्थ होगा, इसलिए सभी के मूल स्वरूप मधुर फलदायी भगवान विष्णु की सेवा–जप सर्वोपरि है।

खोज प्राणी ऐसा बिनाणी, केवल ज्ञानी, ज्ञान गहीरूं, जिहिं कै गुणै न लाभत छेहूं।

हे प्राणी ! तू उन सर्व प्राणियों के मूल स्वरूप सत्य सनातन, पूर्ण ब्रह्म परमात्मा भगवान विष्णु की प्राप्ति का प्रयत्न कर, जो वह केवल ज्ञानी है, ज्ञान के भण्डार है, जन्म–मृत्यु जरा रहित है उनके गुणों का तो कोई – पार ही नहीं है।

गुरू गेवर गरबां शीतल नीरूं, मेवा ही अति मेऊं।

यदि उस सद्गुरु परमात्मा की महानता का वर्णन करें तो वजन पक्ष में तो वह सुमेरू पर्वत से भी

भारी है, और शीतलता में तो जल से भी कहीं अधिक शीतल है। मीठापन में तो मेवा से भी अधिक मीठा है अर्थात् आप जिस रूप में भी ग्रहण करना चाहते हैं, उन्ही गुणों से भरपूर है।

हिरदै मुक्ता कमल संतोषी, टेवा ही अति टेऊ।

सद्गुरु परमात्मा हृदय कमल में सदा ही मुक्त है अनेकानेक हृदयगत रहने वाली वासनाओं की वहां पर स्थिति नहीं है। सदा ही अपनी स्थिति में संतुष्ट रहते हैं। उन्हें किसी बाह्य उपकरण की आवश्यकता नहीं है। सद्गुरु स्वयं तो सदा परकीय आश्रय रहित है किन्तु सांसारिक निराश्रित जनों के सदा ही आश्रय दाता है। जब किसी पर प्रसन्न होते है तो पूर्णतया अपने दास को अपना बना लेते हैं। 'गुणियां म्हारा सुगणा चेला, म्हे सुगणा का दासूं।'

चड़कर बोहिता भवजल पार लंघावै,
सो गुरु खेवट खेवा खेहूँ।

दयालु सतगुरु ने यह शब्दों रूपी नौका इस संसार सागर से पार उतारने के लिये प्रदान कर दी है, जो सचेत होकर इस नैया पर सवार हो जायेगा उसको तो सतगुरु स्वयं केवट होकर पार उतार देगें। जो इस नाव से वंचित रह जायेगा वह बारंबार डूबता रहेगा। सद्गुरु का अर्थ ही है कि वह केवट की तरह समिपस्थ जनों को जन्म मरण के दुखों से छुड़ा दे।

-साभार, जम्भसागर

❀❀❀❀❀❀

पाठकों से अनुरोध है कि.....

- अमर ज्योति प्रत्येक मास की पहली तारीख को भेजी जाती है। यदि 15 तारीख तक आपको न मिले तो इसकी सूचना आप 01662-225804 पर या पत्र, ई-मेल द्वारा दें ताकि आपको दूसरी प्रति भेजी जा सके। सूचना देते समय अपनी रसीद क्रम संख्या अवश्य बताएं।
- जिनकी सदस्यता अप्रैल, 2013 में पूरी हो रही हैं, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अवश्य करा लें।
- अमर ज्योति आपकी अपनी पत्रिका है, इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग दें। अपने मित्रों, सम्बन्धियों एवं परिचितों को भी पत्रिका परिवार का सदस्य बनाएं ताकि वे भी इसके ज्ञानामृत का पान कर सकें।
- अमर ज्योति बिश्नोई सभा, हिसार का समाज हितार्थ प्रकाशन हैं। सभा इसे मंहगाई के युग में भी अत्यन्त कम मूल्य (लागत से भी कम) पर उपलब्ध करवा रही है। आप भी अपने खुशी के अवसरों (विवाह, जन्मदिन, नौकरी, पदोन्नति, व्यवसाय लाभ आदि) पर अपनी इस चहेती पत्रिका को सहयोग देना न भूलें।
- विवाह, जन्मदिन आदि अवसरों पर आप अपने प्रियजनों को अमर-ज्योति की आजीवन सदस्यता रूपी अनूठा उपहार देकर उनके हृदय में चिरस्थायी स्थान बना सकते हैं।
- समय-समय पर अपने सुझावों व प्रतिक्रियों से हमारा मार्गदर्शन करते रहें।
- सदस्यता शुल्क व्यवस्थापक, अमर-ज्योति, बिश्नोई मंदिर, हिसार-125001, हरियाणा के पते पर मनीऑर्डर, चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

-सम्पादक

गुरु जाम्भो जी का वैश्विक चिन्तन एवं श्रीमद्भगवद् गीता

भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर्नाम वपु एक।
इनके पद वंदन किए, नाशत विघ्न अनेक॥
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड़ ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

हम पहले कालजयी सनातन धर्म के काल-चक्र को समझें-तभी हम श्री कृष्णोपदिष्ट-पुरातन व जाम्भोजी द्वारा अनादि व छत्तीस युगों के उल्लिखित काल क्रम को समझ सकेंगे। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि मैंने यह योग प्राचीन काल में विवस्वान् अर्थात् सूर्य को कहा था।

सो हमारा यह सोलर सिस्टम हमारी गेलेक्सी में स्थित एक केन्द्र के चारों और घूम रहा है। एक चक्र पूरा करने में यह जितना समय लेता है - उसको एक मन्वन्तर कहते हैं। एक मन्वन्तर में 30 करोड़, 67 लाख, 20 हजार वर्ष होते हैं। एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युग होते हैं। एक चतुर्युगी होती है 43 लाख, 20 हजार वर्ष की। इसमें 4 लाख 32 हजार वर्ष का कलियुग, 8 लाख 64 हजार वर्ष का द्वापर युग, 12 लाख, 96 हजार वर्ष का त्रेता और 17 लाख 28 हजार वर्ष का सतयुग होता है। जाम्भोजी द्वारा उपदिष्ट पाहल मंत्र में हू-ब-हू यही कालक्रम वर्णित है। कलियुग का दुगुना द्वापर, तिगुना त्रेता और चौगुना सतयुग होता है। ब्रह्माजी के एक दिन को कल्प कहते हैं। एक कल्प में 14 मन्वन्तर होते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में एक जल प्रलय अर्थात् सन्धि होती हैं। एक सन्धि सतयुग मान (17 लाख 28 हजार वर्ष) की होती है। 14 मन्वन्तरों में 15 सन्धियां होती है। इस प्रकार कल्प मान 4 अरब 32 करोड़ वर्ष का हुआ। यह ब्रह्माजी का एक दिन है। उतनी ही उनकी रात होती है। इस प्रकार से महीने व वर्ष बीतते जाते हैं तो सौ वर्ष बीतने पर ब्रह्माजी की आयु पूर्ण हो जाती है।

अभी ब्रह्माजी के 51वें वर्ष का पहला दिन चल रहा है। इसमें भी 7वें मन्वन्तर के अन्तर्गत 28वीं चतुर्युगी का कलियुग चल रहा है। निर्मल गंगा जल की भांति अविरत काल प्रवाह भी गतिमान है। विष्णु की दसावतार शृंखला में अवतरित गुरु जाम्भोजी का शाश्वत कथन कितना समीचीन् है -

बात कदौ की पूछै लोई। जुग छत्तीसूं विचारुं। ताह परैरे अवर छत्तीसूं।
पहला अन्त न पारुँ। म्हे तद पण होता अब पण आछै, बल-बल होयसाँ।
कह कद-कद का करूँ विचारूँ।। (शब्द 4)

अर्थात् हे जिज्ञासु भक्त! तुम कब की बात पूछ रहे हो ? मैं छत्तीस युगों को जानता हूं। उससे पहले के छतीस युगों-जिसके पहले व अन्तिम का कोई पार नहीं है। मैं तब भी था, अब भी हूं और फिर-फिर (पुनः पुनः) अवतरित होऊंगा। तू बता मैं कब-कब की बात का विचार बताऊँ।

आदि विष्णु के अवतार जाम्भोजी ने चौथे शब्द में स्वयं की अनन्त युगीन शाश्वतता का जो उपदेश दिया है, वहीं भगवान् श्रीकृष्ण भी चौथे अध्याय में अर्जुन से ठीक वही बात कहते प्रतीत होते हैं।

बहूनि में व्यतितानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप॥ (गीता 4:5)

अर्थात् हे अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, परन्तु हे पार्थ। उन सबको तू नहीं जानता है और मैं जानता हूं।

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्रोऽपि सन्।
प्रकृतिंस्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्मायया॥ (गीता 4:6)

मेरा जन्म प्राकृत मनुष्यों के सदृश नहीं है। मैं विनाशी स्वरूप, अजन्मा होने पर भी तथा सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (गीता 4:7)

हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपनो स्वरूप को रचना हूं अर्थात् प्रकट करता हूं।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे। (गीता 4:8)

क्योंकि साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म स्थापना करने के लिए युग-युग में प्रकट होता है।

सनातन धर्म सम्पूर्ण वैश्विक समष्टि की कल्याण भावना से ओत-प्रोत है। इसका मूल आधार है वेद और वेद अपौरुषेय हैं। वेदों की तमाम ऋचाओं में - ब्रह्म व धर्म-मात्र इन दो तत्वों का ही निरूपण हुआ है। निराकार ब्रह्म अनाहद नाद **''ओंकार''** रूप में ध्वनित होता है। ओंकार से गायत्री और आदि नारायण (क्षीरशायी आदि विष्णु) का प्रस्फुटन हुआ। विष्णु ''विष्लृ'' धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ सर्वत्र फैलना अथवा व्यापक होना है। महाभारत में विष्णु का सर्वत्र व्याप्त होना उल्लेखित है। इन्हें यज्ञ का स्वरूप मानते हैं। जाम्भोजी ने देहत्याग करते समय अपना दर्शन ज्योति में करने का उपदेश दिया था। यज्ञो वै विष्णु: (शत. ब्राह्मण 1:1:2:13।। इन्हीं विष्णु की दसावतार शृंखला में आठवां अवतरण श्रीकृष्ण के रूप में हुआ। इन्हीं विष्णु के सतयुग के अन्तिम व चौथे अवतरण 'नृसिंह' द्वारा अपने भक्त प्रह्लाद को तेतीस करोड़ अनुयायियों में अवशिष्ट 12 करोड़ के उद्धार हेतु भगवान् विष्णु जाम्भोजी के रूप में ही अवतरित हुए। अस्तु ! स्वयं सिद्ध श्री जाम्भोजी का अवतरण सत्य युग में ही पूर्ण निश्चित अवतार शृंखला का अंग है। श्रीकृष्ण के विष्णवतार प्रमाण श्रीमद् भगवद् गीता में सन्निहित हैं -

नभ: स्पर्श दीप्तमनेक वर्णं व्यात्तानन दीप्त विशाल नेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शम च विष्णो। (गीता 11:24)

क्योंकि हे विष्णो ! आकाश के साथ स्पर्श किये हुए दैदीप्यमान अनेक रूपों से युक्त आपको देखकर भयभीत अन्त:करण वाला मैं धीरज और शान्ति को प्राप्त नहीं होता हूं।

पुनश्च: लेलिह्यसे ग्रसमान:
समन्ताल्लोकानसमग्रान्वदनेर्ज्वलद्भि:।
तेजोराभिपूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्रा: प्रतपन्ति विष्णो।।

और ताप उन सम्पूर्ण लोकों को प्रज्ज्वलित मुखों द्वारा ग्रसन करते हुए सब ओर से चाट रहे हैं। हे विष्णो ! आपका उग्र प्रकाश सम्पूर्ण जगत को तेज के द्वारा परिपूर्ण करके तपायमान करता है।

विष्णु की दसावतार शृंखला के आठवें अवतार वही श्रीकृष्ण कलयुग में जाम्भोजी के रूप में अवतरित हुए। सात वर्ष तक मौन रखने के बाद, जब पुरोहित को वे पहला शब्दोपदेश करते हैं - उसी में कहते हैं -

कृष्ण चरित्र बिन काचे करवे, रह्यो न रहसी पाणी।। (सबद 1)

हे पुरोहित ! तू निश्चित जान कि कृष्णावतार के बिना कच्चे घड़े में न पानी रहा है और न रहेगा। जगत के मूल आधार बाबत उनका कथन देखिये -

आद अनाद तो हम रचिलो। हमें सिरजीलों सै कौण।। (सबद 2)

अर्थात् आदि - अनादि की सर्जना तो हमने की है। हमारा सृजन करने वाला दूसरा कौन है - अर्थात् कोई नहीं। हम स्वयं भू हैं।

जाम्भोजी अपने पूर्व अवतरित नौ अवतारों (1 मत्स्य, 2 कूर्म, 3 वराह, 4 नृसिंह, 5 वामन, 6 परशुराम, 7 राम, 8 कृष्ण, 9 बुद्ध को अपना ही (विष्णु) स्वरूप बताते हुए फरमाते हैं -

नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूँ।

अर्थात् आदि विष्णु नारायण के पूर्व में जो नौ अवतार हुए हैं, वे मेरे ही स्वरूप हैं। स्वयं को कृष्णावतार होने के प्रमाण स्वरूप गुरु जाम्भो जी कहते हैं।

जाटा हूंता पात करीलूं, यह कृष्ण चरित्र परिवाणों।।

अर्थात् मैंने जाट जैसे अशिक्षित मानवों को शब्दोपदेश कर, विष्णु जप में लगाया है यह मेरे कृष्णावतार का प्रमाण है।

श्रीमद्भागवत में दशम स्कन्ध के चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए उन्हें अविनाशी (श्रीकृष्ण को) पुरुषोत्तम नारायण कहते हुए दसावतार स्वरूपों में उनको नमस्कार करते हुए रक्षा की याचना करते हैं।

विष्णु सर्वव्यापी हैं - आदि विष्णु (नारायण) सृष्टि

के मूल हैं। उनकी चिन्तन समष्टिगत हैं। श्रीकृष्ण या जाम्भोजी का चिन्तन, उन्हीं नारायण का चिन्तन है। आत्म स्वरूप में वे जीवमात्र में समाहित हैं। अमूर्त रूपेण-यज्ञ में वे ही निहित हैं। अस्तु श्रीमद्भगवत् गीता और जम्भवाणी दोनों में हवन व यज्ञ का निरूपण हुआ है।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः।
तदर्थं कर्मकौन्तेय मुक्तसङ्ग समाचार।। (3:7)

अर्थात् हे अर्जुन ! बन्धन के भय से भी कर्मों का त्याग करना योग्य नहीं है क्योंकि यज्ञ अर्थात् विष्णु के निमित किये हुए कर्म के सिवा अन्य कर्म में लगा हुआ ही यह मनुष्य कर्मों द्वारा बंधता है। इसलिये हे अर्जुन ! आसक्ति से रहित हुआ, उस परमेश्वर के निमित्त कर्म का भली प्रकार आचरण कर।

श्रीकृष्ण यज्ञ को सृष्टि का मूल आधार निरूपित करते हुए पुनः कहते हैं -

यदा यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष कोऽस्त्विष्ट कामधुक्।।

अर्थात् हे अर्जुन ! कर्म न करने से तू पाप को भी प्राप्त होगा क्योंकि प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं को देने वाला हो।

तीसरे अध्याय के श्लोक नौ से पन्द्रह तक निरन्तर यज्ञ की महत्ता प्रतिपादित की गई है। वार्ता विस्तार से बचने के लिए ग्यारह से तेरह तक तीन श्लोकों की व्याख्या को छोड़ते हुए अन्तिम दो श्लोकों की व्याख्या पर आते हैं।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद् भवति पर्यजन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है तथा वृष्टि यज्ञ से होती है और यह यज्ञ कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।

कर्म ब्रह्मोद् भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

उस कर्म को तू वेद से उत्पन्न हुआ जान और वेद अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। इससे सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

जम्भवाणी में जाम्भोजी अपने तेरहवें सबद में उपदिष्ट करते हैं -

जा दिन तेरे होम न जाप न तप न क्रिया।
गुरु न चीन्हो पंथ न पायो अहल गई जमवारूँ।।

अर्थात् हे भक्त ! जिस दिन तेरे घर में यज्ञ, भगवान् के 'ओ३म विष्णु' इस मंत्र का जप व तप तथा सात्विक कर्म न हुआ। गुरु को पहचान कर जब तक तूने सत्य मार्ग की प्राप्ति नहीं की, तब तक तुम निश्चित जानो कि तुम्हारा मानव जन्म व्यर्थ गया।

इतना ही नहीं भगवान् जम्भेश्वर ने अपने उन्नतीस नियमों में नित्य-प्रति हवन की अनिवार्यता निश्चित करते हुए अपने अनुयायी बिश्नोई सद्गृहस्थों के घरों में नित्य हवन (होम) करने की क्रिया का निर्धारण कर समष्टि गत समस्त जीवों का अनन्त उपकार किया है। जाम्भोजी के मन्दिरों में व साधू सन्तों द्वारा भी नित्य हवन करने का विधान है।

चिन्तनीय बिन्दु यह है कि आखिर यज्ञ की इतनी महत्ता का कारण क्या है ? यज्ञ में ऐसी क्या विलक्षणता है, जो श्रीकृष्ण और जाम्भोजी इस पर इतना जोर देते हैं। इस वैज्ञानिक युग में जहां सभी बातों को प्रयोग की कसौटी पर कसकर ही उसकी उपादेयता स्वीकार की जाती है, वहां पर यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि मात्र दस ग्राम गौ घृत की अग्नि में आहुति देने पर एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है। अस्तु ! सृष्टि नियन्ता का यज्ञ - कर्म को प्रधानता देना-समष्टि-कल्याण की चिन्तना की चरम व परम पराकाष्ठा है। तभी तो जाम्भोजी बिश्नोइयों को उपदिष्ट करते हैं -

गउ घृत लेवे छाण, हवन नित ही करे।

जाम्भोजी की 'सबदवाणी' एवं श्रीकृष्णोपदिष्ट 'श्रीमद्भगवद् गीता' का तुलनात्मक एवं सादृश्यता मूलक आलेख तैयार करने के लिए इन पंक्तियों का लेखक जब गीता एवं सबदवाणी के अंशों को रेखांकित कर रहा था, तो पाया कि दोनों ग्रन्थों की सबसे बड़ी साम्यता यह है कि अध्येता विष्णु में तल्लीन हो जाये। उसे दृष्टिगोचर चराचर पदार्थों में सर्वत्र विष्णु ही नजर

आये। ब्राह्मण-गौ चाण्डाल-श्वान-सब में विष्णु ही दिखाई पड़े।

मानव के तमाम कर्म विष्णु के निमित्त ही हों और तब श्री कृष्ण व जाम्भोजी का यह ध्रुव वचन है कि वह विष्णुमय हो जायेगा। दोनों ग्रन्थों में यह तथ्य सर्वत्र सुगुंफित है। श्रीमद्भगवद् गीता तभी तो विश्व की तमाम भाषाओं में अनुदित होकर, विश्ववन्द्य ग्रन्थ बन चुका है। जर्मन दार्शनिक शोपेन हावर तो इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद भाव-विह्वलता के अतिरेक में इसे सिर पर रखकर एक घण्टा नाचता रहा। आइये ! दोनों ग्रन्थों का साम्यभावी अवगाहन करें।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यन्ति स च मे न प्रणश्यति।।

अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्म रूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिये मैं अदृश्य नहीं होता हूं और वह मेरे लिये अदृश्य नहीं होता, क्योंकि वह मेरे में एकीभाव से स्थित है।

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्य संशयम् (गीता 8:7)

इसलिए हे अर्जुन ! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर, इस प्रकार मेरे में अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त हुआ, निःसंदेह मेरे को ही प्राप्त होगा-

अनन्य चेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।

हे अर्जुन ! जो पुरुष मेरे में अनन्य चित्त से स्थित हुआ, सदां ही निरन्तर मेरे को स्मरण करता है, उस निरन्तर मेरे में युक्त हुए योगी के लिये मैं सुलभ हूं अर्थात् सहज ही प्राप्त हो जाता हूं।

अन्यन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

जो अनन्यभाव से मेरे में स्थिर हुए भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं, उन नित्य एकी भाव से मेरे में स्थिति वाले पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त करता हूं।

सोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्।।

यद्यपि मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूं, न कोई मेरा अप्रिय है और न ही प्रिय, परन्तु जो भक्त मेरे को प्रेम से भजते हैं वे मेरे में और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूं। अगर हमारी भगवान श्रीकृष्ण में अर्थात् विष्णु जम्भेश्वर में पूर्ण श्रद्धा है, तो भगवान् का अपने भक्त के लिए कितना चरम आश्वासन है -

कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।

हे अर्जुन ! तू निश्चय पूर्वक सत्य जान कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।

हमारे समक्ष अतीत कालीन निष्ठावान श्रद्धालु भक्तों प्रह्लाद राजा हरिश्चन्द्र, द्रौपदी, युधिष्ठिर, शबरी, मीरा आदि असंख्य उदाहरण इस वचन के साक्ष्य (प्रमाण) है।

गीता का बारहवाँ अध्याय तो पूर्ण रूपेण भक्ति भाव से आप्लावित है। दसवें अध्याय के तीसवें श्लोक में तो भगवान् श्रीकृष्ण ''दैत्यों में मैं प्रहलाद हूं'' कहकर भक्त को अपनी सारूप्य गति प्रदान कर देते हैं।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्ति योगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्गब्रह्मभूयाय कल्पते।।

और जो पुरुष अव्यभिचारी भक्ति रूप योग के द्वारा मेरे को निरन्तर भजता है, वह इन तीन गुणों (सत्व, रज, तम) को अच्छी प्रकार उल्लंघन करके सच्चिदानन्द धन ब्रह्म में एकीभाव होने के लिए योग्य होता है।

गीता के अठारहवें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण शरणागत भक्त अर्जुन को अमोघ कर देते हुए कहते हैं -

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रति जाने प्रियोऽसि मे।।

तू मुझ वासुदेव परमात्मा में प्रेम में नित्य निरन्तर अचल मन वाला हो। मुझे भजने वाला हो। मेरा (विष्णु का) पूजन करने वाला हो। मुझ विष्णु को भक्ति सहित साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर। मैं तेरे लिये यह सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि तब तू मुझे ही प्राप्त होगा, क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय सखा है।

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं वज्र।

अहं त्वा सर्व पापेम्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

इसलिए सर्व धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्यागकर केवल एक मुझ सच्चिदानन्द घन वासुदेव परमात्मा की अनन्य शरण को प्राप्त हो, मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा, तू शोक मत कर।

अब आईये - जम्भवाणी का अवगाहन करते हैं। जाम्भोजी ने प्रथम सबद में ही अपना सप्तवर्षीय मौनव्रत तोड़ते हुए पुरोहित को अपने कृष्ण (विष्णु) अवतरण बाबत कहा था -

सतगुरु है तो सहज पिछाणी।
कृष्ण चरित्र बिन काँचे करवे रह्यो न रहसी पाणी।।

हे पुरोहित ! सद्गुरु को सम्यक्तया सहज रूप में पहचानो। मैंने कच्चे धागे से कुएं से खींचकर कच्चे घट में जो कूप जल निकाला है - सो स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण अवतरण के बिना कच्चे घट में न तो जल रहा है और न रह ही पायेगा।

विष्णु विष्णु भण अजर जरीजे, यह जीवन का मूलूं।

ओ३म् विष्णु का अहर्निश जप करते हुए, अजर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) के वश में नहीं होना चाहिए - यही मानव जीवन का मूल लक्ष्य है।

अनन्त जुगाँ में अमर भणीजूं न मेरे पिता न मायों।।

मैं विष्णु अनन्त युगों से साँसारिक प्राणियों द्वारा भजनीय हूं। मेरे कोई माता-पिता नहीं है। मैं स्वयं प्रकट हूं।

(विष्णु सहस्रनाम के 18वें श्लोक में विष्णु भगवान् के ''स्वयं भूः व अनादि निधन'' नाम भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बताये हैं।)

भूला प्राणी विष्णु न जंप्यो, मरण बिसारो केहूं।।

हे संसार के मोह युक्त माया जाल में भूली-भटकी जीवात्मा ! तूने विष्णु भगवान का जप क्यों नहीं किया ? तुमने मृत्यु को क्यों भुला दिया ? अर्थात् जन्म-मरण से छुटकारा केवल मात्र विष्णु जप से ही मिल सकता है।

.....क्रमशः

श्री मांगीलाल बिश्नोई ''अज्ञात''
से.नि. व्याख्याता (संस्कृत)
मु.पो. खेतोलई, वाया लाठी,
जिला जैसलमेर (राज.)

'अमर ज्योति'

'अमर ज्योति' है ज्ञान की ज्योति,
गुरु जांभोजी का वरदान है,
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की,
यह समाज परिवर्तन का प्रमाण है।
जैसे तम को हरने के लिए दीपज्योति आवश्यक होती है,
जैसे 'शब्दवाणी' जीवन-पथ की मार्गदर्शक होतीहै।
अमर ज्योति ऐसी ही दीपज्योति और प्रेरक महान है।
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की यह.....
तूफानों में ज्यों आवश्यक कुशल खिवैया,
हताश-निराश जीवन रथ को,
ज्यों चाहिए साहस का पहिया,
'अमर ज्योति' ऐसी पथदर्शक, देती लक्ष्य महान है।
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की यह.....
जन-जन के मन नाच रही है,
अज्ञान-तिमिर की काली छाया,
विकृत चिंतन ने जनमानस को है भरमाया और भटकाया,
'अमर ज्योति' से नित्य बरसता फिर भी दिव्य ज्ञान है।
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की यह.....
व्यक्ति, गृहस्थी और समाज आज व्यसन ग्रसित हैं,
सामाजिक कुरीतियों के आघातों से आहत-से हैं,
त्रसित हैं,
'अमर ज्योति' ऐसे में देती संतुलित समाधान है।
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की यह.....
विषय विकारों को हरने की ये संजीवनी बूटी है,
बिश्नोई साहित्य कि यह आध्यात्मिक कृति है,
महानदान हर अक्षर में, हर पंक्ति में वरदान है।
यह केवल पत्रिका नहीं,
समाज परिवर्तन का अभियान है।
प्रेरणा है स्वपरिवर्तन की यह समाज
परिवर्तन का प्रमाण है।

जय बिश्नोई
(एडमीन-श्री गुरु जम्भेश्वर पेज 'फैसबुक पृष्ट')
जयपुर, राजस्थान
मोबाइल न. 9166878829

जंभवाणी में लोकमंगल की भावना

लोकमंगल की भावना अर्थात् संसार के कल्याण की भावना। जंभवाणी का प्रत्येक शब्द लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है। गुरु जम्भेश्वर जी को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। यह भी सर्वविदित है कि अवतार होते ही जनकल्याण के लिये हैं अत: गुरु जम्भेश्वर जी का अवतार भी जनकल्याण के लिये ही हुआ था। माता हंसा देवी व पिता लोहट जी की तपस्या के उपरांत ही जम्भेश्वर जी ने अवतार धारण किया। परोपकार करना सबसे ऊँचा काम है, इस बात को विष्णु भगवान जानते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में मत्स्यादि अनेक अवतार धारण कर समय-समय पर अपनी प्रजा की रक्षा करते हैं। श्री विष्णु भगवान ने कृष्णावतार में भी बहुत से कार्य किये, जो कुछ शुभ कार्य शेष रहे, उनको पूरा करने के निमित्त श्री विष्णु श्री जम्भेश्वर भगवान के रूप में अवतरित हुए। नृसिंहावतार में लोकमंगल को ध्यान में रखकर भगवान ने प्रहलाद को जो वचन दिया था, उसको पूरा करने के लिये, जीवहिंसादि पापकर्मो को रोकने, शुद्ध वैष्णव आचार-विचार के लिये और अनेक पापों को मिटाने के लिये श्री जम्भेश्वर भगवान प्रकट हुए। जैसा कि उनके जीवन वृत्त में कहा गया है कि बचपन से ही जंगलों में घूमे, पूर्व-पश्चिमी-उत्तर-दक्षिण के देशों को देखा और अपनी योगसिद्धि से अंधों को आँखे दी तथा रोगियों को ठीक किया। संवत् 1593 मार्गशीर्ष कृष्णा (वदि) नवमी को उत्तम शिक्षा से बारह कोटि जीवों का उद्धार कर, योगबल से परमपद को प्राप्त हो गये। इसी जीवन वृत्त से यह स्वत: ही स्पष्ट है कि गुरू जम्भेश्वर का अवतार लोकमंगल की भावना से ही हुआ था। गुरु जम्भेश्वर जी ने अपने उपदेशों में जो कहा उसे 120 शब्दों में जम्भवाणी के नाम से लिपिबद्ध किया गया है। गुरु जम्भेश्वर भगवान के प्रत्येक शब्द जो उनके मुख से उच्चरित हैं मंगलकारक हैं। उन्होंने शब्द संख्या 8 में कहा है'' **किरणी थरपी छाली रोसो किणरी गाडर गाई। सूल चुभीजै करक दुहेली तो है है जायो जीव न घाई।**'' उपर्युक्त शब्द में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है कि जीवों की हत्या उचित नहीं है, क्योंकि जिस समय कांटा मनुष्य की देह में लगता है तो असहनीय वेदना होती है फिर तुम तो उसके देह से सिर को काटते तो तब उसको कितना कष्ट होता होगा। इसी शब्द में आगे कहा है कि ''**चर फिर आवे सहज दुहावै तिसका क्षीर हलाली। जिसके गले करद क्यों सारो थे पढ़ सुण रहिया खाली।**'' तात्पर्य है गाय आदि पशु जंगलों में चरकर आती हैं इनका अमृत के समान दूध जो ये बड़े प्रेम से तुम्हें देती हैं, जो मानव के इहलोक तथा परलोक दोनों के ही सुख के लिये है। उसके गले पर छुरी रखते हो विचार क्यों नहीं करते। क्योंकि परोपकार करने वाले प्राणियों की हत्या करना महानदोष है। आगे शब्द 9 में एक स्थान पर उन्होंने कहा है- '**हम दिल लिल्ला तुम दिल लिल्ला**'' अर्थात् मानव को मानव से कभी द्वेष नहीं करना चाहिए क्योंकि जो व्यक्ति अपने और दूसरे सभी में परमात्मा को देखता है वह न तो आपस में द्वेष रखता है और न ही किसी को भार समझता है अत: हिन्दू हो या मुसलमान सभी को प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। इसमें भी गुरू जम्भेश्वर जी की लोकमंगल कि भावना के दर्शन होते हैं क्योंकि वह सभी से प्रेमपूर्वक रहने का कहते हैं।

जम्भवाणी के शब्द सँख्या 16 में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सत्संगति का महत्त्व बताते हुए लोकमंगल के हितार्थ कहा है कि ''**लोहा नीर किसी विध तरिबा, उत्तम संग सनेहूं।**'' लोहा जल पर कैसे तैर सकता है? जिस प्रकार उत्तम काठ के संयोग से लोहा जल पर तैर सकता है उसी प्रकार उत्तम पुरुषों की संगति पाकर नीच पुरुष भी धार्मिक कार्य में लग जाता है और जन्म मृत्यु रूपी सागर से पार हो जाता है। लोकमंगल की भावना में निमित्त इस शब्द में भी गुरु जम्भेश्वर भगवान ने कहा है ''**जां जां दया न माया तां तां बिकरम**

काया। जिस मनुष्य में दूसरों के प्रति दया भाव तथा स्नेह भाव नहीं है वह व्यक्ति तमोगुणी स्वभाव वाला बनकर अपने शरीर का नाश कर देता है **(जां जां आव न वैसूं तां तां स्वर्ग न जैसूं)** जहाँ आपस में बन्धु-बान्धवों में आदर सत्कार तथा प्रीति आदि गुण नहीं है वहाँ स्वर्ग के समान सुख नहीं हो सकता है **(जां जां जीव न जोती तां तां मोक्ष न मुक्ति)** जिन मनुष्यों को ध्यान करते करते ज्योति स्वरूप आत्मा का अनुभव होता है उसकी मुक्ति होती है। जिनको ज्योति स्वरूप आत्मा का अनुभव नहीं होता उनकी मुक्ति नहीं होती है **(जांजां दया न धर्मू तां तां बिकरम कर्मू)** जिन मनुष्यों में छोटे प्राणियों के प्रति दया तथा अपने से पूज्यों के प्रति श्रद्धा नहीं होती है वह ऐसा करके धर्म विरूद्ध आचरण करता है। इस सबका कहने का गुरु जम्भेश्वर का यही तात्पर्य है कि प्राणियों पर दया करके और घर में आये अतिथि का सम्मान कर हम लोक कल्याण की भावना का निर्वाह करते हैं।

जम्भवाणी में लोकमंगल की भावना को इस शब्द के माध्यम से यही समझा जा सकता है - ''**भल मूल सींचों रे प्राणी ज्यों तरवर मैलत डालूं**'' अरे प्राणी ! सुमूल को जल से सींचो जिससे तुम्हारा वास्तविक कल्याण हो, जैसे पेड़ों की जड़ में पानी देने से वह डाली व तनों को बढ़ाता है तथा पुन: बड़ा होकर सुफल देता है। वास्तव में इस संसार की जड़ (निर्माता) परम पिता परमात्मा ही है अत: उनके श्रद्धापूर्वक जप व ध्यान से व्यक्ति अपना व दूसरों का पूर्ण कल्याण कर सकता है। गुरु वाणी में ही आगे कहा गया है- ''जइया **मूल न सींच्यो तो जामण मरण विगोवो**'' जिसने मूल तत्व परमात्मा का ध्यान व जप नहीं किया उसका जन्मना व्यर्थ हो गया क्योंकि मानव योनि में जन्म लेकर वह आत्म कल्याण नहीं कर सका तथा उसका मरना भी व्यर्थ हो गया क्योंकि मरकर वह परमात्मा में नहीं मिल सका बल्कि यमदूत के हाथ चला गया अर्थात् ऐसे व्यक्ति के लोक व परलोक दोनों बिगड़ गये। लोकमंगल की भावना को प्रतिपादित करते हुए गुरु महाराज आगे कहते हैं- '' **कोई कोई भल मूल सींचीलो भलतत्व बूझीलो**''। कोई व्यक्ति उत्तम संग पाकर सुमूल को सींचते है तथा परम तत्व के बारे में गुरु व संतों से पूछते हैं।'' **जा जीवन की विध जाणी**'' उन्हीं पुरुषों ने मनुष्य योनि में आकर विधिपूर्वक जीवन व्यतीत किया है तथा सफलता प्राप्त की है। ऐसे धार्मिक व साधनायुक्त मनुष्य को जीवन का वास्तविक लाभ मिलता है अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति होती है। शब्द 70 में एक स्थान पर गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है-''**जो अराध्यो राव युधिष्ठिर, सो आराधो रे भाई**'' जिस परम पिता परमात्मा की आराधना तथा सत्य और न्यायपूर्वक प्रजा का पालन राजा युधिष्ठिर ने किया था, उसी प्रकार धर्म व नीतिपूर्वक राज्यों का पालन करके लोकमंगल का काम राजा को करना चाहिए। शब्द 72 में एक स्थान पर बताया है कि मनुष्य के अन्त: करण में प्राय: स्वाभाविक रूप से तीन दोष होते हैं - मल, विक्षेप और आचरण। इनमें मल नाम के दोष का हवन आदि शुभ कर्म करने से नाश हो जाता है क्योंकि हवन से पर्यावरण भी शुद्ध होता है जिससे आज वातावरण में जो प्रदूषण फैला हुआ है हवन के धुएँ से वह शुद्ध कर्म करने से नाश जो जाता है क्योंकि हवन से पर्यावरण भी शुद्ध होता है जिससे आज वातावरण में जो प्रदूषण फैला हुआ है हवन के धुएँ से वह शुद्ध हो जाता है और मनुष्य को शुद्ध वायु ऑक्सीजन के रूप में मिलती है दूसरे मन की कलुषित भावनाएं भी ईश्वर नाम से दूर होती है अत: हवन लोकमंगल के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आगे शब्द सँख्या 75 में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है- ''**ध्याय रे मुंडिया पर दानी**'' परम पिता परमात्मा का ध्यान करो तथा परोपकार करो और हृदय में दया का भाव रखो क्योंकि यदि हृदय में दया का भाव होगा तो एक जीव दूसरे जीव को दुखी देखकर उस पर दया करेगा, तब भी लोकमंगल का कार्य होगा। एक अन्य शब्द 85 में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है-''**भोम भली कृषाण भी भला, खेवट करो कमाई। गुरु प्रसाद काया बढ़ खोजो** ''जैसे उत्तम भूमि हो और किसान मन लगाकर काम करे तो कृषि

की समयानुसार ठीक ढंग से रक्षा, बुवाई, कटाई आदि के द्वारा उसे अधिक उत्तम अन्न की प्राप्ति हो सकती है वैसे ही उत्तम कर्म करे तो वह अपना व सँसार दोनों का ही कल्याण कर सकता है।

इसी प्रकार शब्द 85 में ही गुरु जम्भेश्वर जी ने आगे कहा है कि – **''जुगां जुगां को जोगी आयो, बैठो आसन धारी।** ''जब जब धर्म की हानि होती है और पाप की वृद्धि होती है तब तब मैं (श्री विष्णु भगवान) तपस्वी, योगी आदि दिव्य तेजोमय रूप धारण कर धर्म की रक्षा व पाप का नाश करता हूँ। मैं युगों से प्रकाश स्वरूप था वहीं मैं अब समराथल पर संसार के कल्याणार्थ आसन लगाकर बैठा हूँ। लोग मेरे पास आते हैं और मैं सभी के मंगल के बारे में उन्हें बताता हूँ। जिससे सम्पूर्ण जगत का कल्याण हो।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गुरु वाणी में गुरु जम्भेश्वर भगवान ने जो शब्द कहे हैं उनमें लोकमंगल की भावना कूट कूट कर भरी हुयी है। हम किसी भी शब्द को लें उसमें लोकमंगल की ही बात कही गयी है और बिश्नोई समाज के 29 नियम तो लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत हैं जिनका पालन करने से प्रत्येक मनुष्य का कल्याण होगा न केवल बिश्नोई का। जैसा कि गुरु वाणी में शब्द 15 में कहा गया है- **''ओ३म् सुरमां लेणां झीणा शब्दूं''** अर्थात् जिस प्रकार उत्तम पिसा हुआ सूरमा आँखों के रोग को दूर कर आँखों को देखने योग्य बनाता है उसी प्रकार मेरे सत्य उपदेश जो अति सूक्ष्म बुद्धि से विचार करने के योग्य हैं, इन मेरे शब्दों का आशय अति गंभीर है। ये अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर हृदय में ज्ञानरूपी प्रकाश को फैलाते हैं जिससे मनुष्य आत्मकल्याण के साथ ही लोक कल्याण भी करता है।

❍ **डॉ० छाया रानी**
प्रवक्ता (हिन्दी)
दयानन्द आर्य कन्या (पी.जी.) कॉलेज,
मुरादाबाद।
दूरभाष : 05912451400

मुझे आवाज उठाने दो

मुझे आवाज उठाने दो
मुझे आवाज उठाने दो
हाशिए से अब तो मुझे,
मुख्य पटल पर आने दो।
कब तक आँसू पीती रहूंगी,
अब तो उसे बहाने दो।
अबला बन कर बहुत सहा अत्याचार,
अब तो सबला बन जाने दो।
कितनी अग्नि परीक्षाएं लोगे मेरी,
कभी मुझे भी तो आजमाने दो।
आधी आबादी की पूरी हकीकत,
अब दुनिया को बतलाने दो।
मुझे आवाज उठाने दो...
आरक्षण के भार से मुझे मत दबाओ,
खुद अपनी पहचान बनाने दो।
हममें भी दम है आजादी का,
समाज के बन्धन से मुक्त हो जाने दो।
मुझे आवाज उठाने दो...
ज्वाला बन कर कब तक फूँक सहूं,
अब तो ज्योति बन जाने दो।
सत्ती सवित्री बहुत हुआ,
मुझे आवाज उठाने दो।
पुरूषो की पाशविकता से,
अब तो पिंड छुड़ाने दो
मुझे आवाज उठाने दो...
नीची नजरों से बहुत जुल्म सहा,
अब दुनिया से नजर मिलाने दो।
चार दीवारी भी अब सुरक्षित नहीं,
अब उससे बाहर आ जाने दो।
मुझे आवाज उठाने दो...
सुनती रही अब तक आज्ञा,
अब तो आदेश सुनाने दो।
आजादी के सपने को
हमें भी साकार बनाने दो।
मुझे भी आवाज उठाने दो...
कुछ नहीं कर सकते
तो इतना कर दो
माँ की कोख से,
बाहर तो आ जाने दो
मुझे आवाज उठाने दो...

❒ **राजू ढाका**
चन्द्र नगर, लोहावट, जोधपुर
मो. 9413959287

प्राचीन हिन्दू–सामाजिक व्यवस्था व बिश्नोई समाज

इस धरती पर ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना के समय मानव जाति की रचना की थी। इस मानव जाति का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक विकास हेतु मनु को इनका राजा नियुक्त किया था। राजा मनु ने सामाजिक अनुशासन व्यवस्था स्थापित करने हेतु मानव जाति के चार वर्ग बनाये यथा: 1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शूद्र। इनके अपने–अपने कर्त्तव्य कर्म निर्धारित करते हुए बताया कि 1. ब्राह्मण : वेद–पठन, संस्कार व धर्म प्रचार–प्रसार करेंगे। 2. क्षत्रिय : अपने भुजबल के द्वारा मानव समाज व धर्म की रक्षा करेंगे। 3. वैश्य : कृषक, कारीगर, मिस्त्री, व्यापारी ये सभी खेती, पशुपालन अपने–अपने कार्यों द्वारा पूरे मानव समाज का भरण–पोषण व रहवास की व्यवस्था करेंगे। 4. शूद्र: ये अपने शारीरिक व मानसिक श्रम के द्वारा मानव समाज की सेवा करेंगे।

उन्होंने मानव की आयु अनुमानित 100 वर्ष निर्धारित करते हुए मानव के आयु अनुसार चार आश्रम बनाये यथा : 1. ब्रह्मचर्याश्रम (जन्म से 25 वर्ष), 2. गृहस्थाश्रम (26 से 50 वर्ष) 3. वानप्रस्थाश्रम (51 से 75 वर्ष) 4. संन्यासाश्रम (76 से 100 वर्ष) आश्रमानुसार कर्त्तव्य कर्म निर्धारित करते हुए बताया कि जन्म से 5 वर्ष तक माता–पिता का लाड़–प्यार प्राप्त करना। 6 वर्ष से 9 वर्ष तक पारिवारिक वातावरण की शिक्षा (ज्ञान प्राप्त) करना। 10 वर्ष आयु पूर्ण करने पर उत्तम ब्राह्मण, संत–गुरु के द्वारा गुरु दीक्षा मंत्र दिलाते हुए उपनयन संस्कार धारण करना। 10 वर्ष से 25 वर्ष तक उच्च शिक्षा हेतु अपने बालक को अच्छे गुरुकुल में प्रवेश दिला के शिक्षा–दीक्षा ग्रहण करवाना। फिर गुरु–दक्षिणा प्रदान करके समाज में परिवार वंश वृद्धि हेतु विवाह कराके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करवाना। 51वें वर्ष में प्रवेश करते ही अपना सारा कार्यभार योग्य संतान को सौंप करके गृहस्थ परिवार से उपराम हो करके वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करके पूरे मानव समाज की तन–मन–धन से सेवा करना। 76वें वर्ष में प्रवेश करते ही समाज से उपराम हो करके संन्यास ग्रहण करके अपनी मोक्ष प्राप्ति हेतु हरि नाम जप व आत्म चिन्तन करते हुए साधना के द्वारा समाधिस्थ हो जाना।

जब इसकी मृत्यु हो जाये तो उसकी संतान को चाहिए कि वे शुद्धाचरण, नशामुक्त, गुरुमंत्र से दीक्षित ब्राह्मण को बुला करके अंतिम संस्कार कराना चाहिए। तीन दिन तक वह जीव अपने आश्रय स्थल के आस–पास विदेही रूप में भ्रमण करता है। उन दिनों में हरि संकीर्तन व गरूड़ पुराण की कथा वाचन करायें ताकि उस विदेही जीव की आत्मा सुखी हो सके। रोने चिल्लाने से उस जीव को बड़ा भारी दु:ख होता है। तीन दिन तक उस घर में चुल्हा तक न जलायें अन्य परिजनों के घरों से खाने की सामग्री पका करके उस शोक सन्तप्त परिवार वालों को खिलायें, क्योंकि उस परिवार में पातक का प्रभाव होता है। पातकी परिवार का अन्न–जल ग्रहण करने से पाप लगता है। जब तक उस जीव की अंतिम कागोल व जलांज्जली द्वारा विदाई नहीं हो जाती है। पातक संस्कार का यज्ञ (हवन) होने से पहले यदि उस जीव के परिवार में खाना बनाके भोजन किया जाता है तो उस विदेही जीव पर अन्न ऋण भार लग जाता है। जिसके कारण उस जीव को चींटी, इल्ली व घुंण की योनी (जुण) भुगतनी पड़ती है। तीन दिनों में जो भी उस घर में भोजन करता है उसे अगले जन्म में गीद्ध योनी (जुण) मिलती है। तीसरे दिन उस विदेही जीव की इस संसार से मोक्ष प्राप्ति की ओर विदाई हेतु उत्तम आचरण, नशा मुक्त, गुरुमंत्र से दीक्षित ब्राह्मण के द्वारा यज्ञ कराके गंगाजल का छिड़काव कराके घर के बाहर कागोल की रस्म हेतु मीठा भोजन बना करके उस जीव के चार पीढ़ी तक के कुटुम्बियों की कन्याओं को निमंत्रण दे करके बुलायें। अर्थी (जनाजे) में शामिल सभी कांधियों को भी बुलायें। उन सबकी उपस्थिति में उस विदेही जीव को सुनाते हुए परिवार व समाज सेवा

का संकल्प उनके पुत्रों को लेना और कौओं को भोजन-पानी ग्रहण कराके खेजड़ी पेड़ में हाथ धोते हुए उस जीव को शुद्ध विदाई पूरे कुटुम्ब भाइयों को देनी चाहिए। उसके बाद कुटुम्ब कन्याओं को पहले भोज करावें वस्त्र-फल दान करें। कन्याओं के बाद ब्राह्मण (संत), कांधियों, कुटुम्बियों को भोज करावें। कुपात्र जीव को उस भोज का भाग कतई न करावें।

उस पितृ यज्ञ में गुरु दीक्षा मंत्र से हीन व्यक्ति से आहुति न लगवाये। वह आहुति देने व यज्ञ करने का अधिकारी नहीं होता है। ऐसे व्यक्ति के द्वारा यदि पवित्र कार्य किये जाते हैं तो पुण्यलाभ की बजाय अनर्थ (पाप-दोष) ही होता है, जिसके कारण उस जीव की गति की बजाय अधोगति (भूत-प्रेत योनि) में चला जाता है। कागोल रस्म में शेष बची भोजन सामग्री घर में न ले जा करके गरीबों व पशु-पक्षियों को खिला देना चाहिए। भोजन के दौरान जिस जल कुण्ड के जल का उपयोग किया है उस कुण्ड को खाली करके गंगाजल उसमें छिड़क देना चाहिए। भोजन बनाने व खाने में जिन बर्तनों को काम में लिया गया उन्हें मिट्टी जल से साफ करके गंगाजल से पवित्र करके पुन: बर्ताव करें। कागोल रस्म भोज के बाद उस जीव की संतान (पुत्रों) का मुण्डन कर्म करने के बाद स्नानादि कराके ननिहाल व ससुराल पक्ष उनको नये वस्त्र पहनायें।

यह व्यवस्था 13वीं शताब्दी तक अनेकों संत-महापुरूषों के उचित मार्गदर्शनों से सुव्यवस्थित ढंग से चलती आई। चौदवीं शताब्दी में सभी वर्गों के लोग अपने-अपने निर्धारित कर्त्तव्य कर्मों को त्याग करके अत्याचारी, दुराचारी व पथ-भ्रष्ट हो चुके थे। चारों तरफ इस धरती पर पापियों का बोलबोला होने लग गया। पृथ्वी पापियों के पाप के भार से दबने (व्याकुल) होने लगी तो पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत वर्ष के बागड़ मारवाड़-प्रदेश राजस्थान में नागौर जिले के गांव पीपासर के ठाकुर लोहट जी के घर सम्वत् 1508 भादवा वदि अष्टमी को स्वयं विष्णु भगवान श्री जाम्भोजी के रूप में अवतार लेकर के इस धराधाम पर पुन: धर्म की स्थापना करने आये। उन्होंने वि. सं. 1542 में सम्भराथल धोरे पर विराजमान होकर के सभी धर्मों के लोगों को अपनी ज्ञान रूपि खड़ग के द्वारा मीठी-मीठी मरूवाणी का वार करते हुए व चमत्कार दिखाते हुए उनको सद्मार्ग पर ला करके पुन: मानवता-धर्म की स्थापना की थी। उन्होंने धर्म प्रचार हेतु अनेक देश-देशान्तरों का भ्रमण भी किया।

विक्रम संवत् 1542 की कार्तिक वदि अष्टमी से अमावस्या तक सम्भराथल धोरे पर कलश स्थापना करके अनेक जातियों के लोगों का दीक्षा संस्कार करके पवित्र पाहल के द्वारा शपथ (संकल्प) दिलाते हुए ''जीया ने जुगती, मुवा ने मुक्ति'' हेतु 29 नियम पालनार्थ बताए। जो मानव इन 29 नियमों के अनुसार अपना जीवन यापन करेगा वही सच्चा बिश्नोई कहलायेगा। उन्होंने बिश्नोई नामक सतपंथ की स्थापना की थी।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने इस बिश्नोई समाज के सही संचालन हेतु मर्यादा कायम करने हेतु एक अनुशासन व्यवस्था निर्धारित करते हुए राजा मनु की भांति समाज के तीन वर्ग (रक्षक-दल) बनाये यथा : 1. थरपक (थापन) 2. साधु (संत) 3. गावणा (गायणा) इन तीनों वर्गों को तीन-तीन कार्य सौंपे गये। जो निम्न प्रकार से हैं :- जैसे थरपक (थापन) 1. जन्म (सूतक) संस्कार करना। 2. विवाह संस्कार करना। 3. मृतक संस्कार पर पाहल हवन करना।

विशेष : थरपक (थापन) कोई जाति नहीं वरन उपाधि मान्य है।

थरपक बिश्नोइयों की कोई भी गौत्र जिसमें जो व्यक्ति शुद्धाचरण व नित-नैमतिक 29 नियमों के अनुसार जीवन यापन करता है, उसकी नियुक्ति (थरपना) की जाती थी। इसी प्रकार जाम्भोजी ने आगे से आगे भविष्य में नियुक्तियां जारी रखने का आदेश दिया था। थरपक सूतक व पातक (मृतक) संस्कार वाले घरों में संस्कार से पहले व उस दिन अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। थरपक अपने घर पर सूतक-पातक होने पर संस्कार करने नहीं जायेंगे। अपने स्वयं के घर ये तीनों संस्कार बिश्नोई संतों के द्वारा करवायेंगे। हवन-पाहल-संस्कार करने वाले थरपक को

बिश्नोई साधु से सुगरा होना अति आवश्यक होगा। उसे सफेद पौशाक पहननी होगी। संस्कार-पाहल करते समय सिर पर साफा या रूमाल जिसका एक कोना थोड़ा सा भंगवा होगा धारण करना होगा।

2. साधु (संत) के कार्याधिकार : बिश्नोई समाज में:-

1. सुगरा-संस्कार करना। 2. होली का पाहल करना। 3. सत्संग-जागरण द्वारा धर्म प्रचार करना।

3. गावणा(गायणा) के कार्याधिकार बिश्नोई समाज में:-

1. मृतक दान (वस्त्र-बर्तनादि) लेना। 2. वंशावली लिखना व पढ़ना। 3. विवाहादि उत्सवों पर बाजा बजा के गीत-भजनों का गान करना व बधाइयां प्राप्त करना।

भगवान श्री जाम्भोजी द्वारा बनाई गई यह आचार-संहिता (अनुशासन शासन व्यवस्था) जाम्भाणी परम्परा के नाम से विख्यात हुई। जैसे सोहलवीं शताब्दी में श्री विल्होजी महाराज द्वारा इस धार्मिक व सामाजिक व्यवस्था (परम्परा) को पंच पंचायतियों की गठन व्यवस्था को निर्धारित करके पुन: पुष्ट किया गया।

इसी प्रकार बिश्नोई समाज में भी हिन्दू धर्म में राजा मनु द्वारा निर्धारित की गई सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप भगवान श्री जाम्भोजी व उनके शिष्य विल्होजी महाराज द्वारा पुन: वही मानव-सामाजिक व्यवस्था (आचार-संहिता) कायम की थी। उन्होंने जन्म, विवाह व मृत्यु संस्कारों को करने की सरल व सात्तविक विधि निर्धारित करते हुए बताया था कि जन्म संस्कार शिशु जन्म के 31वें दिन प्रात: वार, तिथि व नक्षत्रों का विचार न करते हुए नित-नेमी, शुद्ध व सुगरे थरपक के द्वारा करवाना है। विवाह संस्कार गौधूली व संध्यावेला में बालिग लड़के-लड़कियों का बिश्नोई समाज में ब्राह्मण सदृश थरपक के द्वारा नाना-नानी व दादा-दादी की गोत्रों को छोड़ करके सम्पन्न करवाया जाये। मृतक (अंतिम) संस्कार तीसरे दिन उत्तम थरपक के द्वारा हवन-पाहल के द्वारा करना। कगोल की रस्म हेतु मीठा भोजन घर से बाहर बना करके कांधियों, मृतक की चार पीढ़ी तक के कुटुम्बियों की उपस्थिति में विदेही जीव को उनके पुत्रों द्वारा परिवार रक्षा व शांती का संकल्प ले करके कौओं को कागोल व शुद्ध जल से अन्न हाथ में रखते हुए जलांज्जली देते हुए मोक्ष प्राप्ति हेतु विदाई दी जाये। उस जीव के निमित्त बना भोज कौओं को देने के पश्चात् सर्वप्रथम कुटुम्ब की कन्याओं को करावे। तत्पश्चात् कांधियों व उस जीव के चार पीढ़ी तक के कुटुम्बियों को भोज करावें। शास्त्र मान्यतानुसार चार क नाम यानि प्रथम क-कौए, दूसरा क-कन्याएं, तीसरा क-कांधियों (अर्थीवाहक) चौथा क- कुटुम्बि चार पीढ़ी के उस भोज को करने व कराने के अधिकारी व महात्तम्य (फल) पुण्य लाभ मिलता है। इस कागोल रस्म में इन चार क नाम वालों के सिवाय अन्य किसी मित्र, संगे-सम्बंधियों को निमंत्रण दे करके न बुलाया जाए। क्योंकि उस भोज को ग्रहण करने के वे अधिकारी नहीं हैं यदि उस भोज को इन चारों के अलावा दूसरे ग्रहण करते हैं तो उन्हें मरने के बाद 3 वर्ष तक कीड़ी नगरे की कीड़ी (चींटी) बन करके उस जीव के निमित बने अन्न ऋण (भार) को उतारना पड़ेगा। कागोल में बनी भोजन सामग्री वितरण (खाने-खिलाने) के बाद शेष बच जाती है तो उसे पशु-पक्षियों व गरीबों में वितरण करके बर्तन साफ करके ही घर में ले जावें। जिस जल कुण्ड से जल बर्ताव (उपयोग) में लिया उस कुण्ड को भी खाली करके अमृत पाहल का छिड़काव करें। उत्तम सद्गृहस्थ बिश्नोई इस सम्पूर्ण हिन्दू जाम्भाणी परम्परा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए संस्कारों को सम्पन्न करवायेंगे तो उसके परिवार में घाटे, कुरूप, भूख का आभास नहीं होगा। सदा ही सुख, शांति, सौहार्द व निरोगता का वातावरण उसके जीवन में बना रहेगा।

संदर्भ : मनु स्मृति व जाम्भाणी साहित्य

-मास्टर मोतीराम कालीराणा
सचिव, जाम्भाणी कुरूति निवारण समिति,
जाम्भा, तह. फलोदी, जिला जोधपुर (राज.)

जड़ता को चैतन्य करो

पूरी दुनिया में आई. टी. और मोबाईल का बहुत तेजी से विकास हुआ है, उसने बहुत कुछ बदल दिया है। आपस में एक दूसरे की जगहों की खबर फौरन पहुँच जाती है। आई.टी. ने आपसी दूरियों को खत्म कर दिया है। इसका खासतौर पर युवाओं में सन्देश गया है कि कहीं दुनिया में अगर कुछ हो रहा है, तो वैसा हमारे यहाँ क्यों नहीं हो सकता, हमारी जीवन शैली (लाईफ स्टाइल) क्यों बेहतर नहीं हो सकती ?

मुझे आज समाज एवं राष्ट्र में जो कुछ परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वो एक तरह से अराजकता की है, समाज में कोई युवा क्रान्ति सकारात्मक कार्य के लिए नजर नहीं आ रही है। मैने किसी लेखक का एक लेख '21वीं शताब्दी की चुनौतियाँ' पढा, लिखा था कि '21वीं सदी में विज्ञान एवं आई.टी. का बोलबाला रहेगा' भारतीय समाज शिक्षित, संयमी, धर्मनिष्ठ तथा महिलाओं एवं बड़े-बुजुर्गो के प्रति आदर-सम्मान रखने वाला होगा।' परन्तु आज मुझे समाज के युवा वर्ग व मोबाइल, आई. टी. की उन्नित के फलस्वरूप जो सकारात्मक एवं आदर्शात्मक, प्रगति एवं परिवर्तन होना चाहिए था, वह आज नकारात्मक दृष्टिकोणों में परिवर्तित होता दिखाई दे रहा है। इसके लिए समाज के युवा वर्ग एवं बुद्धिजीवियों को आगे बढना होगा तथा इन सूचना तंत्र (संचार क्रान्ति) के जो जो दुष्परिणाम हम लोग आज समाचार पत्र एवं आधुनिक संचार-दूरसंचार के उपकरणों में देखते व सुनते हैं, वह कतई प्रशंसनीय एवं सम्मानजनक नहीं है। जहाँ पर हमारा दिमाग इन असामाजिक एवं नकारात्मक क्रिया-कलापों के प्रति आकर्षित होता है, वहीं अगर हमारे दिमाग को सकारात्मक या प्रगतिशीलता की तरफ मोड़े तो वास्तव में जो परिवर्तन युवा-शक्ति कर सकती है, ऐसा अन्यत्र दुलर्भ है। हमें बचपन में माँ का पूरा दूध, शुद्ध शाकाहारी खान-पान व घर के खेत खलिहानों से निकला शुद्ध देशी जो अनाज खाने को मिलता है, उसका उपयोग अगर हम सकारात्मक सोच या उच्च (समृद्ध) विषयों के प्रति करें, तो वास्तव में राष्ट्र के समक्ष एक उच्च मिशाल खड़ी कर सकते हैं।

एक समय ऐसा था, जब कहा जाता था कि युवा होने का मतलब आदर्श है। मगर आज हमे अधिकतर युवाओं को आदर्शवाद न मानने वाले वर्गो में बांट सकते हैं। आदर्श उच्चमूल्यों एवं सिद्धान्तों का एक उत्पाद है, जिन्हे समाज का आधार स्तम्भ माना जाता है। जिस समाज एवं राष्ट्र का आधार स्तम्भ जितना सशक्त, प्रखर एवं पारदर्शी होगा, वह समाज एवं राष्ट्र उतना ही शिक्षित एवं समृद्ध बनेगा। मगर इसी के साथ मुझे कन्फयूशियस का वह कथन याद आता है कि ''अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है, तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा। अगर आचरण पवित्र है, तो घर में शान्ति होगी। अगर घर में शान्ति होगी तो समाज एवं राष्ट्र में सुव्यवस्था होगी। अगर समाज एवं राष्ट्र में सुव्यवस्था है, तो विश्व में शान्ति और सुख का साम्राज्य रहेगा''। आज भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा सन् 1957 में की गई भविष्यवाणी ठीक हमारे ऊपर लागू होती है 'हमारे स्वयं के भ्रमित होने और युवाओं को कोई दिशा न देने के कारण क्षितिज पर चरित्र का संकट आ रहा है' आज विश्व दृष्टिपटल पर हमारा सम्पूर्ण राष्ट्र उस दुष्कृत्य के लिए शर्मसार है, हमें भी उसके विरोध में सजग एवं जागरूक होना अत्यावश्यक है। आज संचार एवं विज्ञान के इस प्रगतिशील युग में हमें इस प्रकार के दुष्कृत्यों से बचना होगा। इसके लिए समाज एवं राष्ट्र के प्रत्येक वर्ग-समूह को आगे आना होगा व अपना सुधार स्वयं से करना होगा। जब हम स्वयं

अपने अन्दर झाँक कर देखेंगे तभी परिवार, समाज एवं राष्ट्र को इस प्रकार के दुष्परिणामों से बचाया जा सकता है। जहां पर वैदिक संस्कृति में नारी को 'यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु, रमन्ते तत्र देवता' के रूप में माना जाता है। वहीं हमें भी इनके प्रति नैतिक एवं चरित्रवान आदर्श प्रस्तुत करना होगा। 'समस्त भारतीय मेरे भाई-बहिन हैं मैं उनके प्रति सम्मान व्यक्त करूँगा प्रतिज्ञा का पालन करना होगा। किसी विद्वान का वह कथन यहाँ पर ठीक ही लागू होगा कि 'इस संसार में जो भी पवित्र एवं पूज्य है वह है नारी, मैं स्वर्ग के बजाय नारी के साथ रहना ज्यादा पसन्द करूंगा।' आज हमें मर्यादापुरूषोतम श्री राम, हनुमान एवं सीता को आदर्श मानकर जीवन यापन करना है तथा अपने समाज एवं राष्ट्र के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना है। वर्तमान संचार क्रान्ति के इस प्रगतिशील युग में फोन, दूरभाष, नेट, फेस बुक का उपयोग करते समय अति सावधानी रखनी होगी, बच्चे एवं जिन्हे आवश्यक नहीं है उसे मोबाईल उपलब्ध कराते समय सोचना होगा, बात करते वक्त मौलिकता, नैतिकता, मर्यादा सहजता एवं विचार सम्प्रेषण कुशलता का भी ध्यान रखना आवश्यक है। वर्तमान में ऐसा कोई भी रास्ता नहीं बचा है कि जहां से हमारे अपने ही लोगो द्वारा हमारे प्रति अनैतिक एवं मर्यादाहीन आचरण प्रस्तुत किया जा रहा है, इसके लिए आदर्शवाद के उच्च मानकों की आवश्यकता है, आज हमें इस संस्कृति-संस्कारहीन शिक्षा को बदलना है, काम विकृति पर नियत्रण रखना होगा, जो तथ्य दिशाहीन कामुकता को बढ़ावा देते हैं उन्हे संयमी, संस्कारवान एवं धर्मनिष्ठ बनाना होगा। आज हम दैनिक जीवन में मन, वचन एवं कर्म से जिस-जिस प्रकार के दोष करते हैं वे दोष हमारी आयु, विद्या, यश और बल को घटाने वाले हैं, हम अपने ही कृत्यों के परिणामस्वरूप अंधकार में जाते है तथा संस्कार विहीन संस्कृति का निर्माण करते हैं। अगर हमें अपनी भावी पीढी को शिक्षित, सभ्य, समृद्ध एवं संस्कारवान बनाना है तो उससे पूर्व स्वयं को संस्कारवान और नैतिकता का आचरण प्रस्तुत करना होगा।

मानव हो तुम मानवता का पाठ हमेशा याद रखो।
जुल्म क्यों करते हो औरों पर दिल में दया का नाम रखो।।

बेईमानी और दुष्कृत्यों से पेट कभी नहीं भर सकता।
अन्याय के पथ पर चलने से जीवन कभी सफल नहीं हो सकता।।

❐ **रामस्वरूप**
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
जयनारायण व्यास वि.वि., जोधपुर
09782005752

लेखकों से अनुरोध है कि...

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी अमर-ज्योति का जून का अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। पर्यावरण से सम्बन्धित शोधपत्र, लेख, कविता, गीत, कहानी, स्लोगन इस अंक हेतु आमन्त्रित हैं। रचना व सुझाव भेजने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल, 2013 है। आप अपनी रचना AAText फोंट में टाईप करके भी भेज सकते हैं। हमारा ईमेल पता है : editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com

नोट : लेख/रचना की अधिकतम शब्द सीमा 1500 है।